Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 4 | (Oct – Dec 2025)

सुमेरपुर विकासखण्ड (हमीरपुर जनपद) का जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व के आधार पर जनांकिकीय विश्लेषण

Pawan Kumar[1], Teerath Raaj[2]
[1]Assistant Professor, Department of Geography, Mahamaya Government College, Kaushambi (Affiliated to Prof. Rajendra Singh (Rajju Bhaiya) University, Prayagraj).
[2]Research Scholar, Department of Geography, P.P.N.(P.G.) College, Kanpur (Affiliated to Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur).

सारांश:

प्रस्तुत अध्ययन सुमेरपुर विकासखण्ड (हमीरपुर जनपद) में 2001 से 2011 के मध्य जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या घनत्व के स्थानिक प्रतिरूपों का भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह शोध पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिनका संकलन भारत की जनगणना 2001 एवं 2011 तथा जिला जनगणना पुस्तिका, हमीरपुर से किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विकासखण्ड स्तर पर जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों, न्याय पंचायत-वार जनसंख्या घनत्व की स्थिति तथा इनके बीच संबंधों को स्पष्ट करना है। विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि सुमेरपुर विकासखण्ड की जनसंख्या वृद्धि दर जनपद की औसत वृद्धि दर से अधिक रही है, जिससे क्षेत्र में जनसंख्या दबाव की स्थिति स्पष्ट होती है। न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व में उल्लेखनीय असमानता पाई गई है, जहाँ कुछ क्षेत्रों में उच्च घनत्व एवं तीव्र वृद्धि के कारण भूमि, जल एवं अन्य संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है, जबकि कुछ क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम घनत्व विकास की संभावनाओं को दर्शाता है। जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व के प्रतिरूप केवल प्राकृतिक वृद्धि तक सीमित न होकर प्रवासन, भौगोलिक स्थिति, भूमि उपयोग एवं आधारभूत सुविधाओं से भी प्रभावित पाए गए हैं। समग्र रूप से यह अध्ययन सुमेरपुर विकासखण्ड में क्षेत्रीय असमानताओं को रेखांकित करता है तथा संतुलित एवं सतत विकास हेतु जनसंख्या आधारित सूक्ष्म-स्तरीय योजना निर्माण की आवश्यकता को प्रतिपादित करता है।

मुख्य शब्द: जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, स्थानिक असमानता, सुमेरपुर विकासखण्ड, जनांकिकीय विश्लेषण।

प्रस्तावना:

जनसंख्या किसी भी क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास, संसाधन उपयोग तथा क्षेत्रीय नियोजन का एक प्रमुख आधार होती है। जनसंख्या की वृद्धि एवं उसका घनत्व न केवल मानव-भूगोल के अध्ययन की आधारशिला हैं, बल्कि ये किसी भी क्षेत्र की विकासात्मक दिशा को भी निर्धारित करते हैं। भारत जैसे विकासशील देश में जनसंख्या वृद्धि की गति असमान रही है, जिसका प्रभाव ग्रामीण-शहरी संरचना, कृषि उत्पादन, भूमि उपयोग तथा बुनियादी सुविधाओं पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसी संदर्भ में उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जनपद स्थित सुमेरपुर विकासखण्ड एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र के रूप में उभरता है, जहाँ जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व में समयानुसार उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित होता है।

सुमेरपुर विकासखण्ड भौगोलिक दृष्टि से बुंदेलखण्ड क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण भाग है, जहाँ कृषि प्रमुख आजीविका का साधन है। यहाँ की जनसंख्या संरचना, न्याय-पंचायत का वितरण, भौतिक संसाधन तथा आर्थिक गतिविधियाँ जनसंख्या घनत्व को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। वर्ष 2001 से 2011 के मध्य विकासखण्ड के विभिन्न ग्राम पंचायतों में जनसंख्या वृद्धि की दर में असमानता देखी गई है, जो कहीं उच्च घनत्व तो कहीं अपेक्षाकृत निम्न घनत्व

के रूप में परिलक्षित होती है। यह स्थिति क्षेत्रीय असंतुलन, संसाधनों पर दबाव तथा विकास योजनाओं की प्रभावशीलता को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत अध्ययन में सुमेरपुर विकासखण्ड में जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या घनत्व के स्थानिक प्रतिरूपों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य जनगणना 2001 एवं 2011 के आँकड़ों के आधार पर ग्रामवार जनसंख्या परिवर्तन को समझना तथा यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार जनसंख्या वृद्धि क्षेत्रीय विकास, संसाधन वितरण एवं योजना निर्माण को प्रभावित करती है। यह अध्ययन न केवल शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी है, बल्कि स्थानीय स्तर पर संतुलित एवं सतत विकास योजनाओं के निर्माण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

साहित्य समीक्षा

डेविस ने अपनी कृति हूमन सोसाइटी में जनसंख्या वृद्धि को सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का प्रमुख कारक माना है। उनके अनुसार किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या का आकार, वितरण तथा घनत्व वहाँ की आजीविका, भूमि उपयोग एवं संसाधन उपभोग को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। डेविस का मत है कि तीव्र जनसंख्या वृद्धि से क्षेत्रीय असंतुलन उत्पन्न होता है, जो विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह अध्ययन सुमेरपुर विकासखण्ड जैसे ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या दबाव को समझने में सहायक है (डेविस, 1951)।

आर.सी. चांदना ने जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या घनत्व को मानव-भूमि संबंधों की अभिव्यक्ति बताया है। उनके अनुसार घनत्व केवल जनसंख्या संख्या का संकेत नहीं देता, बल्कि यह संसाधनों की उपलब्धता, कृषि क्षमता और आर्थिक गतिविधियों को भी दर्शाता है। चांदना का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में असमान घनत्व विकास की विषमता को जन्म देता है, जो सुमेरपुर विकासखण्ड में भी परिलक्षित होता है (चांदना, 2003)।

भेंडे और कानिटकर ने अपनी पुस्तक प्रिंसिपल्स ऑफ पॉपुलेशन स्टडीज में जनसंख्या वृद्धि के कारणों का विश्लेषण करते हुए जन्मदर, मृत्यु दर तथा प्रवासन को प्रमुख कारक बताया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि ग्रामीण भारत में जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण कृषि पर निर्भरता तथा सीमित रोजगार विकल्प हैं। सुमेरपुर विकासखण्ड की जनसंख्या संरचना भी इसी प्रवृत्ति को दर्शाती है (भेंडे एवं कानिटकर, 2010)।

भारत की जनगणना रिपोर्ट जनसंख्या अध्ययन का सबसे प्रामाणिक स्रोत है। जनगणना आँकड़ों के अनुसार 2001 से 2011 के मध्य ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि की गति असमान रही है। हमीरपुर जनपद के अंतर्गत सुमेरपुर विकासखण्ड में ग्रामवार जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व में उल्लेखनीय अंतर पाया गया है, जो क्षेत्रीय विषमता को दर्शाता है। यह अध्ययन जनगणना आँकड़ों पर आधारित होने के कारण अधिक विश्वसनीय है (भारत की जनगणना, 2001 एवं 2011)।

राम आहूजा ने जनसंख्या और समाज के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए बताया कि जनसंख्या वृद्धि का सीधा प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं रोजगार पर पड़ता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या दबाव से भूमि का विखंडन तथा संसाधनों का अत्यधिक दोहन होता है। सुमेरपुर विकासखण्ड में भी कृषि भूमि पर बढ़ता दबाव इसी तथ्य की पुष्टि करता है (राम आहूजा, 2012)।

सिंह एवं सिंह ने अपने अध्ययन में ग्रामीण भारत में जनसंख्या घनत्व के क्षेत्रीय प्रतिरूपों का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार उच्च घनत्व वाले क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं पर दबाव अधिक होता है, जबकि निम्न घनत्व वाले क्षेत्रों में विकास की गति धीमी रहती है। यह निष्कर्ष सुमेरपुर विकासखण्ड के ग्रामवार विश्लेषण से भी मेल खाता है (सिंह एवं सिंह, 2015)।

शर्मा ने जनसंख्या वृद्धि और क्षेत्रीय विकास के अंतर्संबंधों का अध्ययन करते हुए कहा कि संतुलित विकास के लिए जनसंख्या नियंत्रण एवं नियोजित विकास आवश्यक है। उन्होंने यह भी बताया कि जनसंख्या घनत्व के अध्ययन से भविष्य की विकास योजनाओं का निर्धारण किया जा सकता है। सुमेरपुर विकासखण्ड में जनसंख्या वृद्धि के वर्तमान स्वरूप को समझने में यह अध्ययन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है (शर्मा,2018)।

अध्ययन की आवश्यकता:

सुमेरपुर विकासखण्ड में जनसंख्या के स्थानिक वितरण का अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक हो गया है, क्योंकि यहाँ जनसंख्या का वितरण समान रूप से नहीं पाया जाता। विभिन्न न्याय-पंचायतों में जनसंख्या वृद्धि की दर में उल्लेखनीय असमानता देखी जाती है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक जनसंख्या दबाव उत्पन्न हो गया है, जबकि कुछ क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम जनसंख्या एवं धीमी विकास प्रक्रिया देखने को मिलती है। यह असमानता न केवल सामाजिक एवं आर्थिक संरचना को प्रभावित करती है, बल्कि क्षेत्रीय संतुलन को भी बाधित करती है। ऐसे में उच्च तथा निम्न जनसंख्या वृद्धि वाले न्याय-पंचायतों की पहचान करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, जिससे उनके पीछे कार्यरत भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। सुमेरपुर विकासखण्ड कृषि-प्रधान क्षेत्र है, जहाँ भूमि, जल एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर जनसंख्या का सीधा प्रभाव पड़ता है। बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि भूमि का दबाव, जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन, आवासीय क्षेत्र का विस्तार तथा आधारभूत सुविधाओं की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इस संदर्भ में जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व का अध्ययन न केवल वर्तमान स्थिति को समझने में सहायक होता है, बल्कि भविष्य की विकास योजनाओं के निर्माण हेतु भी आधार प्रदान करता है।

अध्ययन क्षेत्र:

सुमेरपुर विकासखण्ड हमीरपुर जनपद का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक एवं भौगोलिक इकाई है, जो चित्रकूट धाम मण्डल के अंतर्गत स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र 25°6' उत्तरी अक्षांश से 25°9' उत्तरी अक्षांश तथा 79°17' पूर्वी देशांतर से 80°21' पूर्वी देशांतर के मध्य विस्तृत है। इसके पूर्व में बाँदा जनपद, पश्चिम एवं उत्तर दिशा में हमीरपुर सदर विकासखण्ड तथा दक्षिण दिशा में मौदहा विकासखण्ड स्थित है, जिससे इसकी भौगोलिक स्थिति रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रशासनिक दृष्टि से सुमेरपुर विकासखण्ड में कुल 10 न्याय पंचायतें सम्मिलित हैं तथा इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 57,853 हेक्टेयर है, जो इसे जनपद के प्रमुख विकासखण्डों में सम्मिलित करता है। जनांकिकीय दृष्टि से सुमेरपुर विकासखण्ड में वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 1,54,815 थी, जो 2011 में बढ़कर 1,71,111 हो गई। इस प्रकार दशकीय अवधि में जनसंख्या वृद्धि स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या में 91,998 पुरुष तथा 79,113 महिलाएँ सम्मिलित थीं, जिससे लिंगानुपात में असंतुलन की स्थिति भी परिलक्षित होती है। साक्षरता की दृष्टि से यह विकासखण्ड अपेक्षाकृत संतोषजनक स्थिति में है, जहाँ औसत साक्षरता दर 68.26 प्रतिशत दर्ज की गई है। इसमें पुरुष साक्षरता 79.61 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 54.92 प्रतिशत रही, जो लैंगिक असमानता की ओर संकेत करती है।

जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से सुमेरपुर विकासखण्ड का औसत घनत्व 295.77 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, जो कृषि-प्रधान क्षेत्र होने के कारण अपेक्षाकृत मध्यम श्रेणी में आता है। भूमि उपयोग प्रतिरूप में कृषि का विशेष महत्व है। यहाँ शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल लगभग 61,650 हेक्टेयर है, जिसमें रबी फसल का क्षेत्रफल 29,530 हेक्टेयर, खरीफ फसल का 21,775 हेक्टेयर तथा जायद फसल का लगभग 83 हेक्टेयर है। यह स्पष्ट करता है कि सुमेरपुर विकासखण्ड की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है तथा यहाँ की जनसंख्या संरचना, भूमि उपयोग और कृषि प्रणाली आपस में घनिष्ठ रूप से संबद्ध हैं।

मानचित्र 01 : अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र

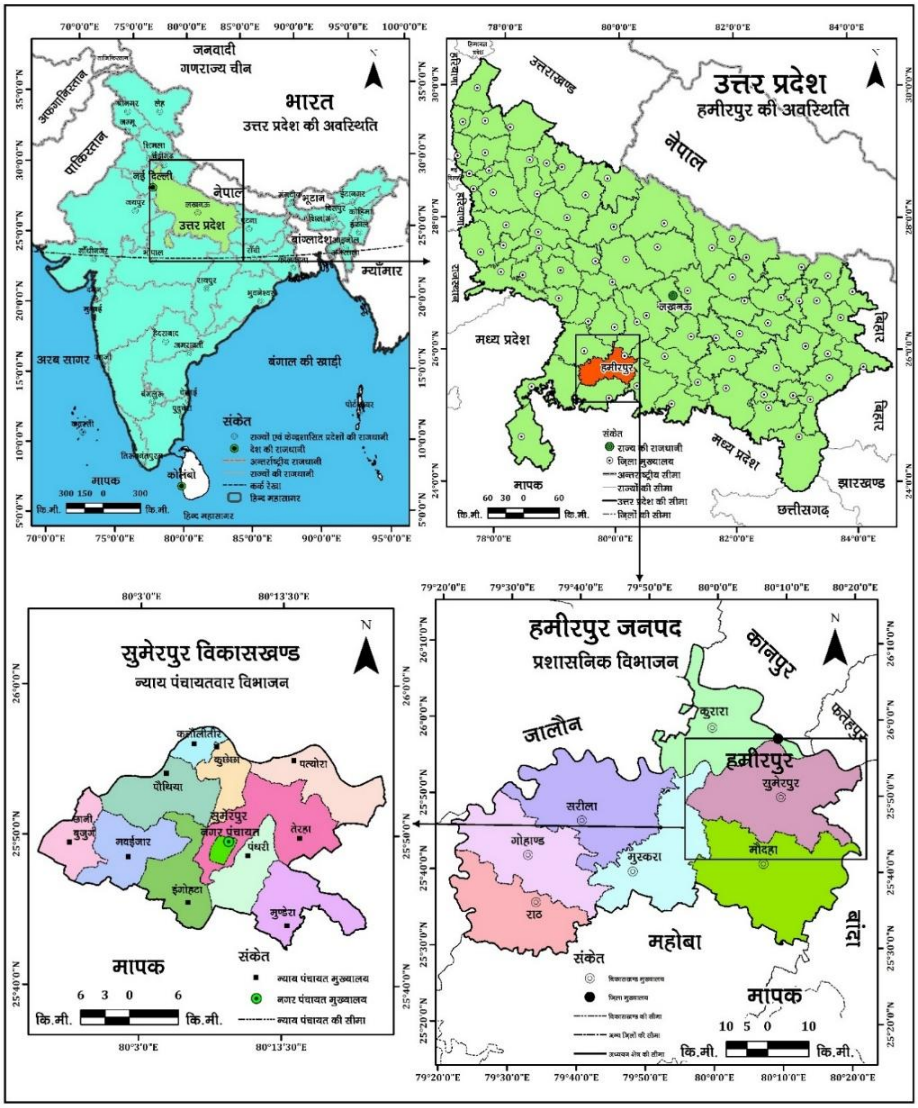

स्रोत: जीआईएस की मदद से निर्मित मानचित्र।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. सुमेरपुर विकासखण्ड में 2001–2011 के दौरान जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण करना।
2. ग्राम पंचायत स्तर पर जनसंख्या घनत्व की स्थिति का अध्ययन करना।
3. जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व के बीच संबंध को स्पष्ट करना।
4. क्षेत्रीय असमानता के कारणों की पहचान करना।

आँकड़ें एवं शोध-विधि:

यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिसमें आवश्यक सूचनाएँ भारत की जनगणना 2001 एवं 2011 तथा जिला जनगणना पुस्तिका, हमीरपुर से प्राप्त की गई हैं। अध्ययन में जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या घनत्व के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है, जिनमें मुख्यतः प्रतिशत विधि एवं तुलनात्मक विश्लेषण को अपनाया गया है, ताकि विभिन्न न्याय-पंचायत के मध्य जनसंख्या संबंधी भिन्नताओं को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण के लिए सारणियों का प्रयोग किया गया है, जबकि क्षेत्रीय प्रतिरूपों को स्पष्ट करने हेतु वर्णनात्मक विश्लेषण के साथ-साथ मानचित्रीकरण के लिए आर्कजीआईएस उपकरण का उपयोग किया गया है। इस विधि से जनसंख्या वितरण, घनत्व तथा क्षेत्रीय असमानताओं को भौगोलिक दृष्टिकोण से प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका: 01

विकासखण्ड सुमेरपुर में जनसंख्या के अनुसार न्याय पंचायत (2001–2011)

क्र.सं.	न्याय पंचायत का नाम	जनसंख्या 2001	जनसंख्या 2011	परिवर्तन	परिवर्तन प्रतिशत
1.	इंगोहठा	21041	24579	3538	16.81
2.	कुछेछा	11499	13401	1902	16.54
3.	कलौलीतीर	13970	15879	1909	13.67
4.	मवईजार	11955	13491	1536	12.85
5.	मुण्डेरा	14248	16203	1955	13.73
6.	पौथिया	26646	23297	3349	12.68
7.	पत्योरा	13528	15990	2462	18.19
8.	पंधरी	13590	15386	1796	13.22
9.	छानी बुजुर्ग	17875	20159	2284	12.78
10.	टेहढ़ा	10623	12726	2103	19.79
11.	सुमेरपुर विकासखण्ड	154815	171111	16296	10.52
12.	हमीरपुर जनपद	1043724	1104285	60561	5.80

स्रोत : जनगणना निदेशक, लखनऊ द्वारा प्रदत्त जनगणना आँकड़ों (2001 एवं 2011) से परिकलित।

तालिका: 02

विकासखण्ड सुमेरपुर में न्याय पंचायत-वार जनसंख्या घनत्व (2001–2011)

क्र.सं.	न्याय पंचायत का नाम	घनत्व 2011	घनत्व 2001
1.	इंगोहठा	333	288
2.	कुछेछा	163	140
3.	कलौलीतीर	387	340
4.	मवईजार	224	199
5.	मुण्डेरा	356	313
6.	पौथिया	434	497
7.	पत्योरा	187	158
8.	पंधरी	288	255
9.	छानी बुजुर्ग	399	353
10.	टेहढ़ा	224	135
11.	सुमेरपुर विकासखण्ड	274	248
12.	हमीरपुर जनपद	330	369

स्रोत : जनगणना हस्तपुस्तिका एवं कम्प्यूटर सीडी, 2001 एवं 2011।

परिणाम और चर्चा:

प्रस्तुत अध्ययन में सुमेरपुर विकासखण्ड में 2001–2011 के मध्य जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व तथा उनके स्थानिक प्रतिरूपों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है, जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय असमानता को स्पष्ट करना एवं जनसंख्या आधारित विकास योजनाओं के लिए ठोस आधार प्रदान करना है। तालिका–01 के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि सुमेरपुर विकासखण्ड की कुल जनसंख्या 2001 में 1,54,815 से बढ़कर 2011 में 1,71,111 हो गई, अर्थात् इस दशक में 16,296 व्यक्तियों की शुद्ध वृद्धि दर्ज की गई, जो 10.52 प्रतिशत वृद्धि दर को दर्शाती है। यह वृद्धि दर हमीरपुर जनपद की औसत वृद्धि दर (5.80 प्रतिशत) से लगभग दोगुनी है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सुमेरपुर विकासखण्ड जनपद का अपेक्षाकृत अधिक जनसंख्या-वृद्धि वाला क्षेत्र रहा है। चित्र–01 में विकासखण्ड एवं जनपद स्तर पर जनसंख्या वृद्धि की तुलना प्रदर्शित की गई है, जिससे यह अंतर दृश्य रूप में और अधिक स्पष्ट हो जाता है।

न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या वृद्धि के विश्लेषण से सुमेरपुर विकासखण्ड में क्षेत्रीय विषमता का स्पष्ट एवं सुस्पष्ट स्वरूप उभरकर सामने आता है। यह तथ्य इंगित करता है कि विकासखण्ड के भीतर जनसंख्या का स्थानिक वितरण एवं वृद्धि दर समान नहीं है, बल्कि विभिन्न न्याय पंचायतों में सामाजिक-आर्थिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। तालिका–01 के अनुसार टेहढ़ा न्याय पंचायत में जनसंख्या वृद्धि

की दर सर्वाधिक 19.79 प्रतिशत दर्ज की गई है, जबकि पत्योरा (18.19%), इंगोहठा (16.81%) तथा कुछेछा (16.54%) न्याय पंचायतों में भी जनसंख्या वृद्धि की दर अपेक्षाकृत अधिक पाई गई है। इन न्याय पंचायतों में कृषि योग्य भूमि की पर्याप्त उपलब्धता, अपेक्षाकृत बेहतर परिवहन एवं सड़क संपर्क, स्थानीय बाजारों की उपस्थिति तथा रोजगार एवं आजीविका के अवसर जनसंख्या आकर्षण के प्रमुख कारक माने जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, इन क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं की तुलनात्मक उपलब्धता ने भी जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहित किया है। इसके विपरीत मवईजार (12.85%), पौथिया (12.68%) तथा छानी बुजुर्ग (12.78%) जैसी न्याय पंचायतों में जनसंख्या वृद्धि की दर अपेक्षाकृत कम रही है। इन क्षेत्रों में सीमित कृषि भूमि, संसाधनों पर बढ़ता दबाव, रोजगार के सीमित अवसर तथा बाह्य प्रवासन की प्रवृत्ति जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने वाले प्रमुख कारक के रूप में देखी जा सकती है। इन न्याय पंचायतों में युवाओं का रोजगार की तलाश में अन्य क्षेत्रों की ओर प्रवासन भी जनसंख्या वृद्धि दर को प्रभावित करता है।

दण्ड आरेख: 02

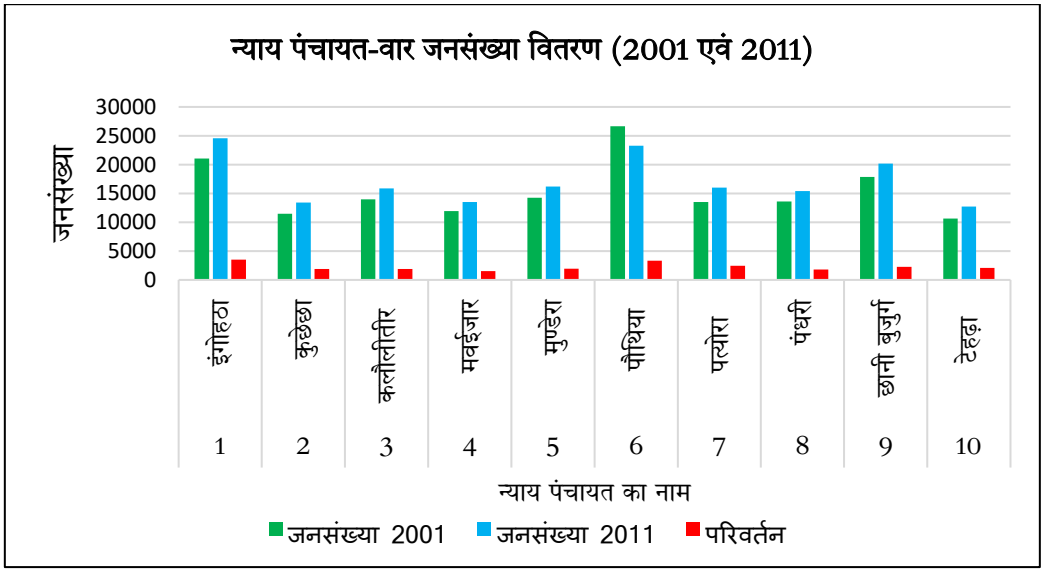

स्रोत: तालिका संख्या 01 से परिकलित आँकड़ें।

इन स्थानिक भिन्नताओं को चित्र–02 में न्याय पंचायत-वार जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है, जिससे उच्च एवं निम्न जनसंख्या वृद्धि वाले क्षेत्रों की पहचान सरल हो जाती है तथा क्षेत्रीय विषमता का दृश्य रूप उभरकर सामने आता है। जनसंख्या घनत्व के संदर्भ में तालिका–02 से यह स्पष्ट होता है कि सुमेरपुर विकासखण्ड का औसत जनसंख्या घनत्व वर्ष 2001 में 248 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था, जो 2011 में बढ़कर 274 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। यह वृद्धि विकासखण्ड में निरंतर बढ़ते जनसंख्या दबाव की ओर संकेत करती है। बढ़ता जनसंख्या घनत्व भूमि, जल एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव को बढ़ाता है, जिससे क्षेत्रीय विकास की चुनौतियाँ और अधिक जटिल हो जाती हैं। इस प्रकार, न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व का यह विश्लेषण सुमेरपुर विकासखण्ड में संतुलित एवं सतत क्षेत्रीय विकास की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

दण्ड आरेख : 03

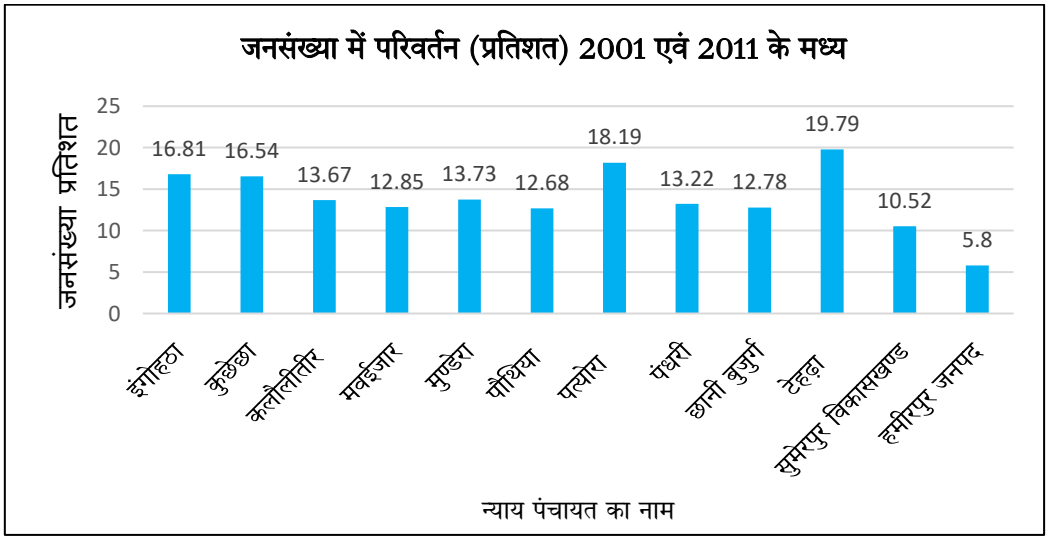

स्रोत: तालिका संख्या 01 से परिकलित आँकड़ें।

न्याय पंचायत स्तर पर पौथिया (434 व्यक्ति/वर्ग किमी), छानी बुजुर्ग (399 व्यक्ति/वर्ग किमी) तथा कलौलीतीर (387 व्यक्ति/वर्ग किमी) उच्च जनसंख्या घनत्व वाली पंचायतें हैं, जहाँ सीमित क्षेत्रफल में अधिक जनसंख्या का संकेंद्रण पाया जाता है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि पौथिया पंचायत में 2001 की तुलना में 2011 में जनसंख्या घनत्व में कमी (497 से 434) दर्ज की गई है, जबकि जनसंख्या परिवर्तन सकारात्मक रहा है। यह स्थिति प्रवासन, भूमि उपयोग परिवर्तन अथवा प्रशासनिक सीमाओं में संभावित परिवर्तन की ओर संकेत करती है। इसके विपरीत टेहढ़ा पंचायत में जनसंख्या घनत्व 135 से बढ़कर 224 हो गया है, जो तीव्र जनसंख्या वृद्धि एवं क्षेत्रीय आकर्षण को दर्शाता है। इन प्रतिरूपों को चित्र–03 में न्याय पंचायत-वार जनसंख्या घनत्व के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है।

दण्ड आरेख: 04

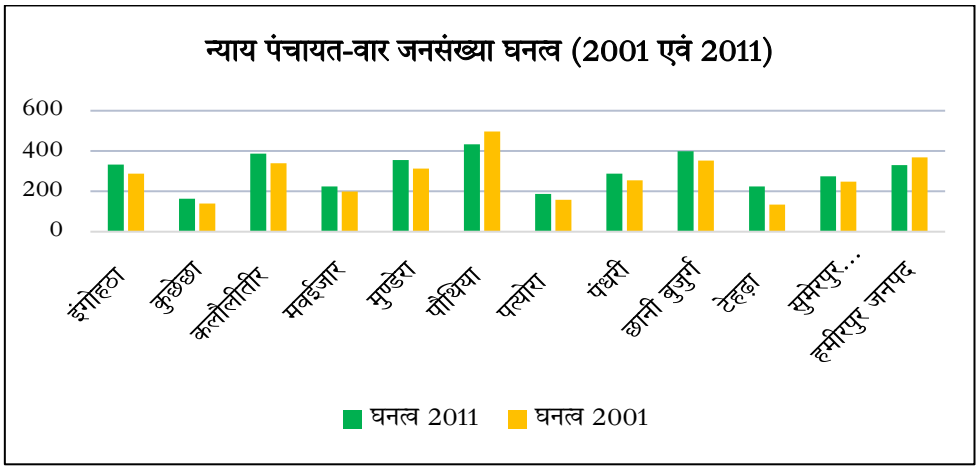

स्रोत: तालिका संख्या 02 से परिकलित आँकड़ें।

जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या घनत्व के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण यह दर्शाता है कि दोनों के मध्य संबंध सभी पंचायतों में समान नहीं है। कुछ क्षेत्रों में उच्च जनसंख्या वृद्धि के साथ उच्च घनत्व भी पाया गया है (जैसे इंगोहठा, मुण्डेरा एवं पत्योरा), जबकि कुछ पंचायतों में वृद्धि दर अधिक होने के बावजूद घनत्व मध्यम स्तर पर बना हुआ है (जैसे टेहढ़ा)। इससे स्पष्ट होता है कि जनसंख्या वृद्धि केवल प्राकृतिक वृद्धि का परिणाम नहीं है, बल्कि प्रवासन, भौतिक पर्यावरण, भूमि की उपलब्धता, कृषि क्षमता एवं आधारभूत सुविधाएँ भी इसमें निर्णायक भूमिका निभाती हैं। यह असमानता सुमेरपुर विकासखण्ड में संसाधनों पर असंतुलित दबाव उत्पन्न कर रही है, जहाँ उच्च घनत्व वाले क्षेत्रों में जल, भूमि, आवास एवं सार्वजनिक सुविधाओं पर दबाव अधिक है, जबकि अपेक्षाकृत कम घनत्व वाले क्षेत्रों में विकास की संभावनाएँ विद्यमान हैं।

मानचित्र: 02

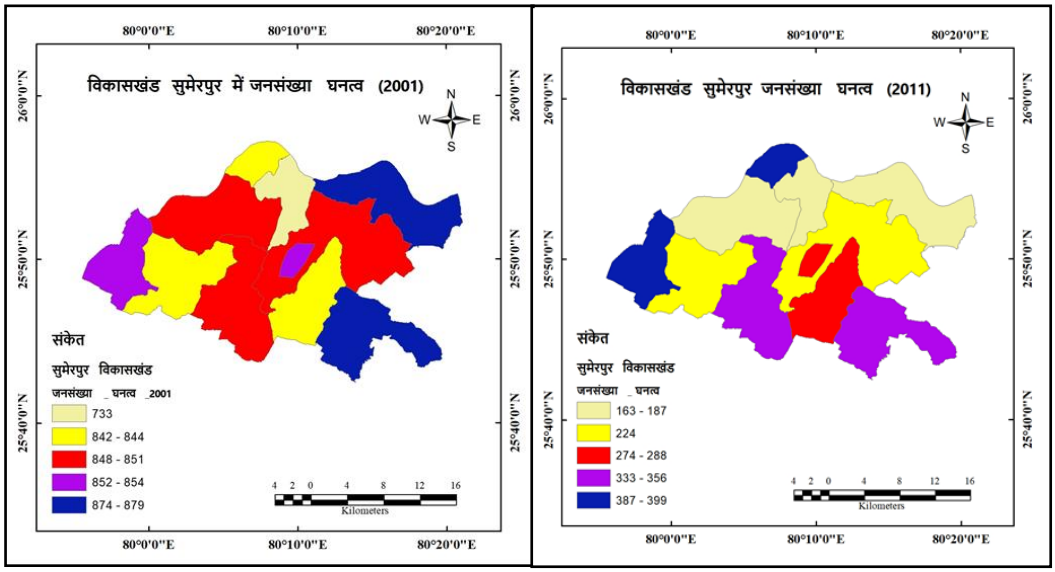

स्रोत: तालिका 02 के आंकड़ों का प्रयोग करते हुए, जीआईएस की मदद से निर्मित मानचित्र।

समग्र रूप से, परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि सुमेरपुर विकासखण्ड में 2001–2011 के दौरान जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या घनत्व में उल्लेखनीय स्थानिक विविधता विद्यमान है। तालिकाओं एवं चित्रों (दण्ड आरेख –02 , 03 एवं 04) के संयुक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए जनसंख्या आधारित सूक्ष्म-स्तरीय योजना निर्माण अत्यंत आवश्यक है। उच्च वृद्धि एवं उच्च घनत्व वाले न्याय पंचायतों में बुनियादी सुविधाओं, रोजगार सृजन एवं संसाधन प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, जबकि अपेक्षाकृत कम घनत्व वाले क्षेत्रों में विकास को प्रोत्साहित कर क्षेत्रीय असमानता को कम किया जा सकता है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन अपने निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप सुमेरपुर विकासखण्ड के जनांकिकीय स्वरूप को स्पष्ट करने में सफल सिद्ध होता है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में यह स्पष्ट होता है कि सुमेरपुर विकासखण्ड में 2001–2011 के दौरान जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या घनत्व में उल्लेखनीय स्थानिक असमानता पाई गई है। विकासखण्ड की जनसंख्या वृद्धि दर हमीरपुर जनपद के औसत से अधिक रही, जिससे यह संकेत मिलता है कि यह क्षेत्र जनसंख्या आकर्षण की दृष्टि से अपेक्षाकृत सक्रिय रहा है। न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व के प्रतिरूप समान नहीं पाए गए, जहाँ

कुछ पंचायतों में उच्च वृद्धि एवं उच्च घनत्व के कारण भूमि, जल एवं अन्य संसाधनों पर दबाव बढ़ता हुआ दिखाई देता है, जबकि कुछ क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम घनत्व विकास की संभावनाओं को दर्शाता है। जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व के बीच संबंध क्षेत्र-विशेष की भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर पाया गया, जिससे क्षेत्रीय विषमता की स्थिति स्पष्ट होती है। अतः सुमेरपुर विकासखण्ड में संतुलित एवं सतत क्षेत्रीय विकास के लिए जनसंख्या आधारित सूक्ष्म-स्तरीय नियोजन, संसाधन प्रबंधन एवं बुनियादी सुविधाओं के विस्तार की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

संदर्भ सूची:

1. डेविस, के. (1951). Human Society. न्यूयॉर्क: मैकमिलन पब्लिशर्स।
2. चांदना, आर. सी. (2003). जनसंख्या भूगोल (Population Geography). नई दिल्ली: क्योनिका पब्लिशर्स।
3. भेंडे, ए. ए., एवं कानिटकर, टी. (2010). Principles of Population Studies. नई दिल्ली: हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
4. भारत सरकार (2001). जनगणना भारत 2001: जिला जनगणना पुस्तिका – हमीरपुर (उत्तर प्रदेश). नई दिल्ली: जनगणना संचालनालय, भारत सरकार।
5. भारत सरकार (2011). जनगणना भारत 2011: जिला जनगणना पुस्तिका – हमीरपुर (उत्तर प्रदेश). नई दिल्ली: जनगणना संचालनालय, भारत सरकार।
6. आहूजा, राम (2012). भारतीय समाज. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
7. सिंह, आर. एल., एवं सिंह, के. (2015). भारत का जनसंख्या भूगोल. वाराणसी: छात्र मित्र प्रकाशन।
8. शर्मा, एस. आर. (2018). जनसंख्या अध्ययन एवं क्षेत्रीय विकास. नई दिल्ली: राज पब्लिकेशन।
9. भारत सरकार (2011). Primary Census Abstract, Uttar Pradesh. Registrar General of India, New Delhi.
10. यादव, के. एन. (2016). ग्रामीण भूगोल. इलाहाबाद: साहित्य भवन।